ज्योति बसु के शरीर की विरासत

डॉ. डी. बालसुब्रमण्यन

ज्योति बसु के निधन के साथ हमने एक महान जन-नायक खो दिया। इस बारे में काफी कुछ कहा व लिखा गया है कि उन्होंने भूमि सुधार व पंचायती राज के क्रियांवयन के ज़रिए गरीबों को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया था। कुछ लोगों ने यह भी कहा कि कैसे एक नास्तिक होते हुए भी वे मदर टेरेसा के प्रशंसक थे और कई तरह से उनकी मदद की थी। यह तो तार्किकतावाद का प्रमुख पक्ष है; अच्छे काम करने के लिए ज़रूरी नहीं है कि आप ईश्वर में विश्वास करते हों।

अलबत्ता, ज्योति बसु द्वारा तार्किकता और जन भावना से किए गए एक ज़बर्दस्त कार्य के बारे में बहुत कम लिखा गया है। यह कार्य उनका यह निर्णय था कि उनके शरीर को सुपुर्दे आतिश या सुपुर्दे खाक न किया जाए, बल्कि इसका उपयोग अंग दान व अनुसंधान हेतु किया जाए। जैसा कि बाची करकारिया ने *दी टाइम्स ऑफ इण्डिया* के अपने स्तंभ (21 जनवरी 2010) में लिखा था, "उन्होंने उस अंतिम जज़्बाती नाटकीयता का अवसर नहीं दिया जो लपलपाती लपटों के साथ या यहां तक कि विद्युत शवदाह गृह के द्वार बंद होने के साथ पैदा होती है। उन्होंने अपने अंतिम विश्राम के लिए अस्पताल की डिसेक्शन मेज़ को चुना।"

कितनी उत्कृष्ट बात है। यह निर्णय करते हुए उन्होंने 'लोक सेवक' की एक विशेषता को साकार किया है: 'परोपकारम इदम् शरीवम्' यानी मेरा शरीर विभिन्न अर्थों में दूसरों की भलाई के लिए है। तमिल का एक मुहावरा है 'यानई इरंदलुम् आयिरम पोन, इरंदलुम् आयिरम् पोन' (हाथी जीवित हो या मृत हज़ार स्वर्ण मुद्राओं के बराबर होता है)। क्या आपकी जानकारी में कोई अन्य भारतीय नेता है जिसने अपना शरीर दूसरों की मदद के लिए सौंप दिया हो?

दी हिंदू अखबार (21 जनवरी, 2010) ने ज्योति बसु द्वारा अपने नेत्र दान करने की खबर देते हुए कहा था कि यह अनुकरणीय उदाहरण है। सुश्रुत नेत्र चिकित्सालय, कोलकाता के डॉ. आर.सी. पाल कहते हैं, "मैं आपको यकीन दिलाता हूं कि उनके कॉर्निया का उपयोग किया जाएगा।" कुछ लोगों को शंका थी कि क्या एक 95 वर्षीय व्यक्ति की आंखों के कॉर्निया प्रत्यारोपण हेतु उपयोगी रहेंगे, खासकर जब उस व्यक्ति ने लगभग अपनी पूरी ज़िंदगी चश्मा लगाया हो। जवाब है, "बेशक, बशर्ते कि कॉर्निया को सही ढंग से निकाला जाए और कॉर्निया के पिछले भाग में कोशिकाओं की संख्या एक सीमा से अधिक हो।" श्री बसु की सामाजिक स्थिति और सम्बंधित नेत्र बैंक की कुशलता के मद्देनज़र इस बात में संदेह की कोई गुंजाइश नहीं है कि कॉर्निया को सही ढंग से निकाला गया होगा। रही दूसरी बात यानी प्रति इकाई क्षेत्र में एंडोथीलियल कोशिकाओं की संख्या, तो इसका पता लगाना होगा और यदि यह संख्या पर्याप्त हुई तो कॉर्निया का उपयोग किसी भी ज़रूरतमंद व्यक्ति के लिए किया जा सकेगा।

हैदराबाद के रामयम्मा अंतर्राष्ट्रीय नेत्र बैंक में किए गए अनुसंधान से यह स्पष्ट हो चुका है कि प्रत्यारोपण के

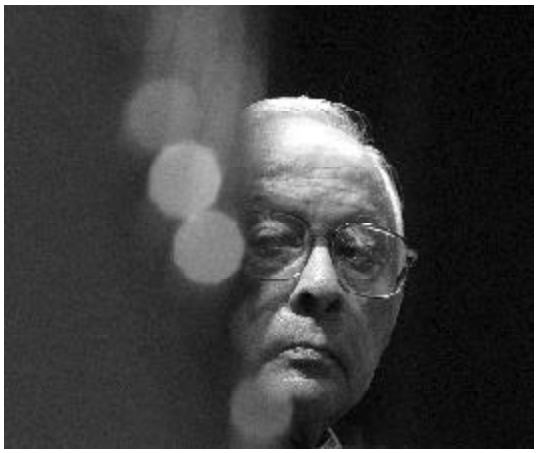

लिए कॉर्निया की उपयुक्तता का निर्धारण व्यक्ति की उम्र से नहीं बल्कि एंडोथीलियल कोशिकाओं की संख्या और कॉर्निया की पारदर्शिता के आधार पर होता है। अर्थात न सिर्फ वरिष्ठ बल्कि अति-वरिष्ठ नागरिकों के कॉर्निया का उपयोग ज़रूरतमंदों को रोशनी देने के लिए संभव है।

इस संदर्भ में एक वैज्ञानिक तथ्य महत्व का है। शरीर के समस्त अंगों और ऊतकों में से कुछ ऐसे होते हैं जिनमें लगातार कोशिका निर्माण होता रहता है। जैसे, त्वचा की कोशिकाएं रोज़ झड़ती हैं और नई कोशिकाएं उनका स्थान ले लेती हैं। लाल रक्त कोशिकाएं हर 120 दिन में बदल जाती हैं। लिहाज़ा, यदि आप उनके खून की बात करें, तो श्री बसु की उम्र मात्र 4 माह थी।

आंखों का कॉर्निया भी लगातार नवीनीकृत होता रहता है। हर बार जब हम पलक झपकाते हैं, तो कॉर्निया की सतह की कुछ कोशिकाएं गंवा देते हैं मगर नई कोशिकाएं उनका स्थान ले लेती हैं। कॉर्निया के अन्य हिस्सों में भी नई कोशिकाएं बनती हैं मगर धीमी गति से। अलबत्ता, आंख का लेंस एक ऐसा ऊतक है जिसमें नई कोशिकाएं नहीं बनतीं। इसलिए यह आपकी उम्र का सही पैमाना है। श्री बसु की आंख के लेंस उनकी 95 वर्ष की वय बताते हैं। मगर कॉर्निया के लिहाज़ से वे अपेक्षाकृत युवा थे।

श्री बसु का मस्तिष्क अनुसंधान के लिए बैंगलोर स्थित नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेंटल हेल्थ एण्ड न्यूरोसाइन्स (निमहैन्स) को दान किया गया है। इंस्टीट्यूट के प्रोफेसर एस. के. शक्कर बताते हैं, "हालांकि ज्योति बसु 95 वर्ष के थे मगर अंतिम समय तक उनकी दिमागी दक्षता काफी अच्छी थी। उनका मस्तिष्क एक स्वस्थ मस्तिष्क और तंत्रिका विघटन की बीमारियों से ग्रस्त मस्तिष्क के तुलनात्मक अध्ययन में उपयोगी साबित होगा।" निमहैन्स के ब्रेन बैंक में विभिन्न उम्र के मनुष्यों के 100 से ज़्यादा मस्तिष्क हैं। यह संस्थान श्री बसु के मस्तिष्क को प्राप्त करने व उसका अध्ययन करने के लिए सर्वथा उपयुक्त है।

श्री बसु के मस्तिष्क के अध्ययन में इस दिलचस्पी के बारे में पढ़ते हुए मुझे कार्ल सैगन की पुस्तक '*ब्रोकास ब्रेन - रिफ्लेक्शन ऑन रोमांस ऑफ साइन्स*' (ब्रोका का मस्तिष्क - विज्ञान से प्रेम पर कुछ विचार) का ख्याल आया। बैलेंटाइन बुक्स द्वारा 1974 में प्रकाशित इस पुस्तक के एक आलेख, ब्रोकास ब्रेन, में कार्ल सैगन पैरिस के एक संग्रहालय में जाते हैं जहां कांच के एक मर्तबान में एक मानव मस्तिष्क रखा है, इस पर लेबल है - पी. ब्रोका।

उनके हाथ में है डॉ. पौल ब्रोका का मस्तिष्क। डॉ. पौल ब्रोका मध्य उन्नीसवीं सदी में चिकित्सा व मानव शास्त्र के विकास के अग्रणी व्यक्ति थे। सैगन इस संरक्षित मस्तिष्क के एक भाग पर ध्यान देते हुए लिखते हैं, "सेरेब्रल कॉर्टेक्स के बाएं फ्रंटल लोब की तीसरी सिलवट वह क्षेत्र है जिसे ब्रोका क्षेत्र कहते हैं। जैसा कि ब्रोका ने टुकड़ा-टुकड़ा प्रमाणों के आधार पर निष्कर्ष निकाला था, सुस्पष्ट वाणी काफी हद तक ब्रोका क्षेत्र में स्थित होती है और इसी से नियंत्रित होती है। ...यह पहला-पहला संकेत था कि मस्तिष्क के अलग-अलग कार्य अलग-अलग क्षेत्रों में स्थित होते हैं, और मस्तिष्क की बनावट और उसके कार्यों में सम्बंध है।"

आम तौर पर लोग मानते हैं कि संग्रहालय पत्थरों और हड्डियों के अजायबघर हैं। सच्चाई यह है कि संग्रहालय हमें सूझबूझ प्रदान करते हैं और ज्ञान की प्रगति में सहायक होते हैं। कभी-कभी ये रचनात्मक सोच को छलांग लगाने की चिंगारी भी प्रदान करते हैं। अपने जीवन में श्री बसु ने अपने शरीर में स्थित मस्तिष्क से लोगों के जीवन को प्रभावित किया। अब प्रतीक्षा करें कि बोतल में रखे उसी मस्तिष्क से वे क्या करते हैं। उन्होंने जो साहस दिखाया है वह हममें से कई लोगों को प्रेरित करेगा कि वे अपना शरीर दूसरों के भले के लिए उपहार दे दें। आप इसे अपने साथ तो नहीं ले जा सकते। दे डालिए। मैं यही करने जा रहा हूं। ***(स्रोत फीचर्स)***